पंचम् अध्याय

नाट्यभाषा,प्रसंगानुकूल, पात्रानुकूल भाषा, नाटकों में भाषा एवं संवाद का महत्व, संवाद एवं भाषा के आधार पर विभिन्न नाटकों का अध्ययन ।

पंचम अध्याय

"भाषा–संवाद"

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वप्रमुख उपकरण है। नाटक के मूल तत्वों तथा विविध उपकरणों में कथोपकथन का महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है। यदि रंगमंच निर्देशों को नाटक से निकाल दें तो कथोपकथन के अतिरिक्त अवशिष्ट कुछ नही रहता । " नाट्यकार को अभिष्ट –सिद्धि तक पहुँचाने का एकमात्र वाहन संवाद ही तो है। "1–पात्रों के चरित्र विकास, कथावस्तु के विन्यास, और विभिन्न रसों की निष्पत्ति का उत्तम से उत्तम साधन संवाद योजना ही है। डॉ0 दशरथ ओझा ने कथोपकथन के विषय में अपना मत व्यक्त किया है–" सफल नाटककार का कथोपकथन उस वायुयान के सदृश युगपत विविध कार्य करता है जो कभी जल पर संतरण, कभी स्थल पर संचरण और कभी आकाश में विचरण करता हुआ दृष्टिगत होता है। जिस कथोपकथन में जितनी अधिक चरित्र–चित्रण की क्षमता,व्यापार प्रसार की योग्यता और रस परिपाक के लिए भावोद्बोधन की तीव्रता होगी,वह उतना ही उत्तम माना जायेगा। संवाद की उपादेयता पर नाटक की अधिकांश सफलता अवलम्बित है। "2

नाटक की भाषा सरल, सुगम एवं प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। कलाकार,नाट्यकार सामान्य जनसमुदाय में प्रचलित भाषा को अपनी प्रतिभा के विमान पर बैठा कर कला के उच्च शिखर पर प्रतिष्ठित कर देता है। डॉ0 गिरीश रस्तोगी ने भाषा एवं संवाद को महत्वपूर्ण बताते हुए अपना मत व्यक्त किया है।–" कथा वस्तु के बाद पात्र चरित्र चित्रण आदि तत्वों का भी विशेष महत्व है। नाटक में कथा के प्रस्तुतीकरण के लिए पात्रों की भावाभिव्यक्ति और विचार विनिमय के लिए संवाद योजना अनिवार्य है। नाटक की सम्पूर्ण कथा का विकास, पात्रों का चरित्र–चित्रण,उद्देश्य प्राप्ति, देशकाल का ज्ञान संवादों के माध्यम से होता है। "3–

1– डॉ, दशरथ ओझा – हिन्दी नाटक उद्भव और विकास पृ0 265

2– डॉ, दशरथ ओझा – हिन्दी नाटक उद्भव और विकास पृ0 265

3–डॉ, गिरीश रस्तोगी – हिन्दी नाटक सिद्धान्त और विवेचन पृ0 45

" नाटक में संवाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 लक्ष्मी मल्ल सिंघवी ने अपना मत व्यक्त किया है।–" नाटक का क्षितिज समय के साथ संवाद ,सृजन के साथ संवाद,एवं सौन्दर्य बोध के साथ संवाद तक फैला है। इस लिए नाटक में सबसे महत्वपूर्ण संवाद ही है।"1– प्रसिद्ध साहित्यकार रंग समीक्षक, एवं कवि प्रो0 नेमिचन्द्र जैन ने नाटक की भाषा एवं रंग–भाषा पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि "हमारे देश में नाटक को दृश्य काव्य कहा जाता है। नाटक एक ऐसा काव्य है जिसमें आलेख हो , किन्तु वह दृश्य हो। अतः नाट्य भाषा के दो पक्ष हैं – पहला काव्य और दूसरा उसका दृश्य रुप।" 2–

नाटक में लिखी जाने वाली भाषा चिन्तन की भाषा होती है। हमारे यहॉ नाटक की भाषा काव्यात्मक रही है। काव्यात्मक भाषा एक श्रेष्ठ प्रकार की शक्तियुक्त, दीप्तियुक्त भाषा होती है, जो जीवन को बुनियादी प्रश्नो की ओर ले जाती है और जीवन को उर्ध्वमुखी बनाती है। नाटक की भाषा एक बड़े अर्थ को ध्वनित करती हैं उसमें एक खास तनाव एवं संगीत होना चाहिए जो दर्शक के मन पर प्रभाव डाल सके। नाटक में पात्रों के कई स्तर होने के कारण नाटक की भाषा के भी कई स्तर होते हैं। पात्रों का संयोजन भी नाट्य भाषा को बनाता है। समग्रतः काव्य अभिनेता की गति ,मुद्राऍं, नृत्य, संगीत, चाक्षुष, परिवेश, वेषभूषा, प्रकाश इत्यादि सभी नाटक की भाषा को निर्धारित करते हैं। नाटक की भाषा पर अपने विचार प्रगट करते हुए आलोचक एवं कवि डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव ने कहा है कि " मात्र नाटक होने से ही नाट्य–भाषा नहीं बन जाती है। ढ़ेर सारे ऐसे नाटक हैं जो शब्दों से बोझिल हैं। नाटक में दिखाई देने वाले के साथ–साथ नहीं दिखई देने वाला भी महत्वपूर्ण होता है। एक सर्जनात्मक अनुभव के रूप में भाषा बहुत कुछ खोजती है। भाषा सीमित रहते हुए भी सम्भावनाओं में असीमित है।"3

नाटकों की भाषा बोलचाल की तथा साहित्यिक होनी चाहिए। काव्यात्मकता के साथ ही अभिव्यंजनापूर्ण भी होनी चाहिए। मुहावरों,लोकोक्तियों का प्रयोग भी होना चाहिए। सरल, सहज , ही संप्रेषणीय हो। जब संवाद –विधान में अभिनय की सम्भावना अधिक होगी,नाटकीय प्रभाव उतना ही अधिक पड़ेगा। लम्बे लम्बे दार्शनिक भाषण स्वगत कथन, अस्वाभाविकता तथा भाषा की दुरूहता किसी भी रचना के लिए असफलता का कारण बन सकती है।

1– नटरंग अंक 62 – डॉ, लक्ष्मीमल सिघंवी पृ0 50

2– नटरंग अंक 62 –नैमिचन्द जैन पृ0 50

3– नटरंग अंक 62 – प्रो. परमानन्द श्रीवास्तव पृ0 52

"नाटक की भाषा अपनी बड़ी सम्भावनाओं के साथ उजागर होती है।"–1

भारतेन्दु–युग की प्रारम्भिक मंचीय भाषा का स्वरूप प्रसाद युग में गति नहीं पा सका। प्रसाद युग में भाषा को परिस्कार और नूतन संस्कार मिले, लेकिन, इस काल की भाषा को मंचीय संस्कार नहीं मिल सका। कोमलकान्त पदावलियों से युक्त प्रतीकात्मक,रूमानी और काव्यात्मक भाषा ने उस युग में मंच की सम्भावना ही समाप्त कर दी। दार्शनिक, गहनता, बोझिलपन ,अनावश्यक विस्तार और साहित्यिक भावुकता आदि गुणों से युक्त भाषा ने नाटकों को पांडित्य की उपलब्धि बनाया। रंग–मंचीय धारणा नाटककारों के लिए स्वप्न बनी रही, और नाटक सुपाठ्य ही बने रहे। पांचवे दशक में हिन्दी नाटककारों में रंग मंच के प्रति रुझान जागृत हुआ। उन्होंनें नाटक की भाषा एवं संवाद को महत्वपूर्ण माना। वास्तव में स्वतंत्रता के बाद रंगोपलब्धियों का युग प्रारम्भ होता है। इस युग की नाट्य भाषा रंग–संस्कारों से युक्त मंचीय कलेवर में है। उसमें मंचीय कौशल के साथ नाटकीय दृश्य –लयात्मकता है और रंगानुकूल आकर्षण उत्पन्न करने की अपूर्व क्षमता है। इस युग में नाटकीय शब्द कौशल और रंग–युक्तियों का विधान महत्वपूर्ण है। संवाद योजना में भी इस युग में आमूल परिवर्तन हुआ। मंचीय दृश्यात्मकता संयुक्त छोटे, चुस्त ,तीखे , आकर्षक और ठोस संवाद रचे जाने लगे। भाषा शब्दों में चरित्र–संस्कार और देश–काल वातावरण की सफल व्यंजना हुई । भाषा की विलक्षण सांकेतिकता ने रंग–मंच को विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया। रंग–मंच ,रंग–धर्म और रंग–भाषा के अभूतपूर्व संगम ने नाट्य–भाषा शिल्प के क्षेत्र में अनेक सम्भावनाओं को जन्म दिया । जन भाषा रंग–मंच का एक नूतन आकर्षण सिद्ध हो रही है। मंचीय संवादों में दर्शकों को अपने से जोड़ने की अद्भुत शक्ति उद्भूत हुई है। इस युग के नाटकों में रंग–धर्म से भरपूर , कटे–पिटे ,अधूरे सांकेतिक, प्रश्न गर्भित ,सम्बोधन युक्त लक्ष्य और व्यंग्य से भरपूर ,पार्श्वध्वनि समन्वित आदि विविध डिजायनों के आकर्षक संवाद देखे जा सकते हैं। "नाटक की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसमें संवाद–प्रेक्षण और अर्थ–ग्रहण एक साथ केवल एक ही बार होता है। एक बार पढ़ने या सुनने पर कुछ समय में न आये, तो अन्य विधाओं में पुनर्वाचन या 'इरशाद ' का सहारा लिया जा सकता है। नाटक में यह सम्भव नहीं हैं।"2–,

---

1– नटरंग अंक 62 – प्रो, विश्म्भर शरण पाठक पृ0 51

2– नटरंग अंक 59 – डॉ, विलास गुप्ते पृ0 22

नाटककार को अपनी ओर से कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है। वह पात्रों के माध्यम से ही अपनी बात प्रगट कर सकता है। वह इस जगह स्वतंत्र है कि उसके पात्र कैसी भाषा का प्रयोग करेंगें। किन्तु भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए। नाटक की सफलता पात्रानुकूल भाषा पर भी होती है। भाषा एवं संवादों के महत्व नाटकों में स्वतः सिद्ध है। हमें यह देखना है कि आलोच्य नाट्य लेखिकाओं में अपने नाटकों में इसका किस प्रकार निर्वाह किया है।

मन्नू भंडारी के "बिना दीवारों के घर" नाटक की भाषा एक शिक्षित परिवार की आम बोल– चाल की भाषा है। इसमें बोल चाल में पूरी तरह घिसे हुए अंग्रेजी एवं उर्दू शब्दों का व्यवहार हुआ है। मुहावरों का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार किया है यथा– तेल निकालना,आसमान पर चढ़ाना। सभी पात्रों की भाषा एक सी है । घर का माहौल तनावपूर्ण है,उसको व्यक्त करने में मन्नू भंडारी की भाषा पूरी तरह समर्थ है।

नाटक के संवाद पति–पत्नी के सम्बन्धों की टूटन को व्यक्त करने में सक्षम हैं। शोभा घर छोड़ते समय अजित से कहती है– " ठीक है तो मैं अकेली ही चली जाऊँगी । जहाँ मैंने अपने भीतर की पत्नी को मारा है,वहीं अपने भीतर की माँ को भी मार दूगीं।"1–.

भाषा कथ्य को स्पष्ट करती हुई सहज बोध देती है। भाषा इतनी जानदार,मार्मिक व्यंगात्मक और असरदार है कि प्रेक्षक उसकी पकड़ में आने के लिए विवश हो जाता है। कथ्य के अनुरुप भाषा में कशिश व कचोट है।

मन्नू भंडारी के नाट्यान्तर 'महाभोज' की भाषा भी कथ्य के अनुरूप है। उनकी भाषा में चित्रात्मकता,प्रवाहमयता,रोचकता,भावप्रवणता,प्रतीकात्मकता,व्यंग्यात्मकता सभी गुण विद्यमान हैं। महाभोज की भाषा भी पात्रानुकूल है। जहाँ एस.पी. सिंहा की भाषा,अंग्रेजी मिश्रित है– 2–"आय वान्ट टु गो थ्रू इट।" वहीं बिसू का पिता कहता है। 3–का कहत सरकार। व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग मन्नू जी ने बखूबी किया है।4–" दा साहब की चाल उल्टी कैसे पड़ी?

1– बिना दीवारों के घर – मन्नू भण्डारी पृ0 99

2– महाभोज – मन्नू भण्डारी पृ0 129

3 –महाभोज – मन्नू भण्डारी पृ0 113–114

4– महाभोज – मन्नू भण्डारी पृ0 178

पर्याप्त मात्रा में स्पष्टता तथा सांकेतिक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मन्नू भंडारी ने प्रतीकों का भी प्रयोग किया है। जैसे दफ्तर में गांधी, नेहरु की तस्वीर, गीता का प्रदर्शन। मन्नू जी के पात्र पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं। बौद्धिकता या परिष्कृत भाषा का रुप मन्नू भंडारी के नाटकों में प्रत्येक जगह विद्यमान है।——"यह तुम नही तुम्हारा स्वार्थ बोल रहा है। स्वार्थ को इतनी छूट देना ठीक नहीं कि विवेक ही खो जाय। अखबारों को तो आजाद होना ही चाहिए।"1–,

मन्नू भंडारी की भाषा के विषय में डॉ0 गोरधन सिंह शेखावत ने अपनी पुस्तक नई कहानी –' उपलब्धि और सीमाएँ में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है–"मन्नू भंडारी की भाषा पात्रानुकूल एवं सजीव है। तथा वह परिवेश के निर्माण में सहायक है। उसमें प्रवाह एवं सादगी होते हुए भी मोहकता है, मिठास है। भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है।"2–

'आहें और मुस्कान' विमला रैना का विविधरंगी नाटकों का संग्रह है। नाटकों के अनुकूल ही उनकी भाषा भी सभी विशेषताओं को समेटे हुए हैं। उनकी भाषा में अंग्रेजी,उर्दू,संस्कृत भाषा के शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। दिनेश आर्मी में जनरल हैं उनकी भाषा उनके अनुरुप ही हैं।–

औफुली स्वीट, आफ यू टू सो। औफुली स्वीट ! मगर ट्रूथ कमबख्त ट्रूथ ही रहता है। 3–,

पात्रानुकूल भाषा का उदाहरण विमला रैना के नाटक धरती रुठ गई से उद्धृत है अरे का बत्ताई काकी। जैहर देखो ओहर आंखी चौधियाय जाय। 4–,

विमला रैना ने अपने नाटकों में व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग किया है –

" जी हॉं अगर इजाजत हो तो ।"5–,

1– महाभोज – मन्नू भण्डारी पृ0 19

2– नई कहानी – उपलब्धि और सीमाऐं – डॉ, गोर्धन सिंह शेखावत पृ0 30

3– आहें और मुस्कान – विमला रैना पृ0 91

4– आहें और मुस्कान – विमला रैना पृ0 229

5– आहें और मुस्कान – विमला रैना पृ0 54

" एक कैदी क्या माँगता है मेंम साहब।"   1–,
विमला रैना की भाषा में चित्रात्मक के दर्शन अनेक जगह पर होते हैं– " किसी गरीब औरत या मर्द को कोई एक रोटी लेते जाते देखे तो क्या समझ सकता है ? किसी सरदार को कमल का फूल ले जाते देखे तो रास्ते में पकड़े जाने का खौफ नहीं। खुफिया तौर पर इस रोटी और इस कमल के फूल के माने समझा दिये गये हैं।"2–,

विमला रैना की भाषा भावप्रवण है। उसमें रोचकता एवं प्रवाह मयता है– हॉ, अपनी फोटो से बहुत बड़ी लगती है। अब शायद निशी के लिए एक–एक दिन महीनों सा बीता हो। विमला रैना के नाटकों में सरल बोलचाल की भाषा का प्रयोग है। पात्रों की मनःस्थितियों को व्यक्त करने में इनकी भाषा पूर्णतः सक्षम है।–"ओह निशी तू कितनी भाग्यशाली है। काश तेरी तरह बिना किसी बन्धन के मैं भी अपनी स्वेच्छा से अपनी इच्छाएँ पूरी कर पाऊँ।"3–

विमला रैना ने पात्रानुकूल व प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।
ठहरा हुआ पानी और एक और दिन शांति मेहरोत्रा रचित नाटक हैं। इनके नाटकों की भाषा सरल,सहज,व्यंग्यात्मक है। शांति मेहरोत्रा की भाषा के व्यंग्य का एक रुप प्रस्तुत है–
'शर्मा बाबू ! थोड़ी देर और बिना इलाज के यहॉं इसी तरह खड़ेरहे तो हमारे लिए बिना परोपकार के ही स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे। "4–,
"घास के नीचे कोई देख नहीं सकता, और सॉप टार्च जला कर चलता नहीं।" 5–,

शांति मेहरोत्रा की भाषा में चित्रात्मकता,प्रवाहत्मकता विद्यमान है। उनकी भाषा में वातावरण,पात्रों की मनःस्थिति को व्यक्त करने की अपूर्व क्षमता है। भाषा पात्रानुकूल है–" साब खियाल तो बौत अच्छा है, पर जब हम घर से चला तब हमारा घरवाली बोला जे तुम परदेस में जाता है, उदर में सारा औरत लोग को माता के माफिक देखना। "6–,

1– आहें और मुस्कान – विमला रैना पृ0 54

2– आहें और मुस्कान – विमला रैना पृ0 189

3– आहें और मुस्कान – विमला रैना पृ0 194

4– एक और दिन – शांति मेहरोत्रा पृ0 9

5– एक और दिन – शांति मेहरोत्रा पृ0 6

6– एक और दिन – शांति मेहरोत्रा पृ0 45

पात्रानुकूल अंग्रेजी भाषा का भी प्रयोग किया गया है।–" वी नेवर थिंक एलाइक "1–,
इनके नाटकों में प्रवाहमयता व रोचकता बनी रहती है। संवाद चित्र प्रस्तुत करने से प्रगट होते हैं–" हाथ हिला कर विदा देती भीड़ को पीछे छोड़ती हमारी शानदार गाड़ी, नदी किनारे एक विशाल बंगला,फूलों की रंगीन क्यारियों के बीच पन्ने सी जड़ी मखमलीं घास, जाड़े की धूप से दिन ,रजनीगंधा की खुशबू सी रातें और उस जादू लोक में खोए हम दोनो।2–"

कहीं–कहीं लक्षणा प्रधान भाषा का प्रयोग भी शांति मेहरोत्रा ने किया है– '' अच्छा, तुम्हारी किसी लेडी डॉक्टर से दोस्ती है ? क्यों ? ऐसे ही पूछा।'' –3

'वर्धमान रुपायन' कुंथा जैन का महावीर भगवान के जीवन तथा जैन–धर्म की महत्ता को कथ्य बनाकर लिखा गया नाटक है। 'वर्धमान रुपायन' की भाषा तत्कालीन परिवेश को प्रस्तुत करने में समर्थ है। चरित्रों में जीवंतता है। गीतों का प्रयोग भी संदर्भो को जोड़ने के लिए किया गया है जिससे नाटक में रोचकता आ गयी है।

'दर्द आयेगा दबे पॉव' शीला भाटिया कृत संगीत नाटक है। प्रस्तुत नाटक मशहूर शायर 'फैज अहमद फैज ' के जीवन पर आधारित है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् चरित्र प्रधान नाटकों की रचना अधिक हुई,जिनका उद्देश्य चरित्रगत विभिन्न ग्रंथियों का उद्घाटन है। इस प्रकार के नाटको में पात्रों का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण मार्मिकता के साथ किया गया है। प्रस्तुत नाटक की संवाद योजना सुगठित व प्रभावशाली है। भावों की अभिव्यक्ति सरल व सरस है। लम्बे संवादों का प्रयोग नहीं किया गया है। संवादो में पर्याप्त नाटकीयता का बोध होता है। भाषा शुद्ध परिष्कृत है। भाषा में पात्रानुकूल उर्दू ,फारसी के शब्दों का प्रयोग किया गया है। शिल्प के क्षेत्र में प्रयोगशील नाटक है। भाषा सहज और सरल है। भाषा कथ्य को उजागर करनें की क्षमता रखती है।

डॉ. 'कुसुम कुमार' की भाषा सहज ही संप्रेषणीय है। उनकी भाषा सभी विशेषताओं से भरपूर है। उनके नाटकों में भाषा के विविध रूप उपस्थित है। उनके नाटक रावण लीला की भाषा हास्य एवं व्यंग्य से भरपूर है–

1– एकऔर दिन – शांति मेहरोत्रा पृ0 65

2– एकऔर दिन – शांति मेहरोत्रा पृ0 80

3–एकऔर दिन – शांति मेहरोत्रा पृ0 137

EHTA LIBRARY

' अरे उसी कातिल रामचन्द्र से और किससे ? तेरी माँ व तेरे भाई का भी तो उसी ने किया था काम तमाम ।''–1

'' हनुमान के जखम पर मरहम–पट्टी लगा दो यार। रामलीला चलने दो।''–2 उनकी भाषा के हास्य एवं व्यंग्य का एक और रूप – '' वो मिसिज दानी ......कल से डॉक्टर मिसिज दानी हो गयीं हैं ....पता है कुछ। ''–3

उनकी भाषा में चित्रात्मकता , प्रवाहमयता है,पात्रानुकूल है [illegible] अगर विद्यार्थी है तो उसकी भाषा विद्यार्थी जैसी होगी,प्रोफेसर है तो उसके व्यक्तित्व के अनुकूल। रचनात्मक परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया है । डॉ कुसुम कुमार ने – '' करने को तो अब पीएच.–डी. भी मिल चुकी है । मुझे–पी.एच–डी. में मेरा विषय कबीर से तो ज्यादा जटिल था,पर मिसिज मंगला तो सीधे कवीर के व्यक्तित्व पर ही पी.एच–डी. किए हुए हैं– यह प्रश्न उन्हीं से पूछना ज्यादा ठीक होगा।''–4

पात्रानुसार वे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी करती हैं यथा– टीचर्स,रिमार्क्स, रिस्पैक्ट,मैडम, प्लीज,,रिस्टीकेट,डेस्क, प्रोफैसन,इंटेलिजेंट,क्रिएटिव, कार्टून।

डॉ. कुसुम कुमार की भाषा सहज, सरल एवं संप्रेषणीय है। उनकी भाषा पात्रानुकूल होने के साथ ही साथ प्रसंगानुकूल भी होती है यथा–

'' देखिए,माधो भाई,आपकी हमारी चिन्ता दो नहीं हैं, और अकेले ही आपको सारी चिन्ताएं करती हों तो दिल्ली का रास्ता अभी खुला है। बड़ी खुशी से आप अभी भी वापस जा सकते हैं। आप हमारे बड़े भाई जैसे हैं माधो भाई, हमें भी तो अपना मानिए।''–5

कुसुम कुमार ने छोटे–छोटे संवादों के माध्यम से अपनी भाषा में सांकेतिकता का पुट दिया है–

आज के पेपर में प्रधानमंत्री का भाषण पढ़ा ?

हाँ पढ़ा।

1– रावण लीला – डॉ, कुसुम कुमार पृ0 22

2– रावण लीला – डॉ, कुसुम कुमार पृ0 37

3– ओम कांति–कांति – डॉ, कुसुम कुमार पृ0 11

4– ओम कांति–कांति – डॉ, कुसुम कुमार पृ0 11

5– ओम कांति–कांति – डॉ, कुसुम कुमार पृ0 36

पढ़कर हँसी नहीं आई ?

रोना आया। –1

'पवन चतुर्वेदी की डायरी' की भाषा भी प्रवाहपूर्ण हैं। पात्रानुकूल , प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग कुसुम जी के हर नाटक में विद्यमान है। उनकी भाषा में मुहावरे,लोकोक्तियों का प्रयोग नहीं किया गया है,पर भाषा सहज ही संप्रेषणीय है। संवादों से पात्रों की मनःस्थिति स्पष्ट परिलक्षित होती हैं–

" आप मुझे यह याद दिलाने आते हैं कि मैं डॉ. चतुर्वेदी का बेटा हूँ– पद्म–विभूषण डॉ. चतुर्वेदी का बेटा ! जिसके तौर–तरीके,रहन–सहन,चाल–चलन में सिर्फ अपनें पिता की प्रतिष्ठा झलकनी चाहिए। बेटे की परिस्थितियां कुछ माने नहीं रखती।"–2

उनकी भाषा परिस्थितियों को स्पष्ट करने में पूर्णतः सक्षम है– झावेरी ब्रदर्स–एक सौ बतीस...एक सौ बत्तीस

–नौलख एन्टरप्राइज–एक सौ दो...एक सौ तीन...एक सौ तीन.. तीस..एक सौ तीस–पैंतीस"।

' संस्कार को नमस्कार' सम्पूर्ण नाटक ही हमारे समाज के लिए व्यंग्य है। डॉ.कुसुम कुमार की भाषा पैनी व व्यंग्य से पूर्ण है। संस्कार भाई जो इस नाटक के प्रमुख पात्र हैं,उनकी आरती करती हुई लड़कियाँ गाती हैं–

"जय नारी रमणा स्वामी जय नारी रमणा

जाए बलिहारी तिहारे दुःख पातक हरणा

जय नारी रमणा।"–3

कुसुम जी की भाषा में कहीं मिठास है तो कहीं पैना व्यंग्य। भाषा कहीं सहज सरल है तो कहीं शुद्ध परिष्कृत ,उनकी भाषा उनके कथ्य व पात्रों के अनुकूल है। उनके नाटक ' सुनो शेफाली' में व्यंग्य व कटाक्ष का एक रूप–

" ज्योतिषी महोदय की गाय तुमने देखी नहीं। दूल्हे की घोड़ी से कहीं ज्यादा सजाकर रखा जाता है। गले में जेवर ही जेवर पहने हैं,लेकिन माथे पर के तेवर उसके देखे नहीं जाते"4 –,

1– दिल्ली ऊंचा सुनती है – कुसुम कुमार पृ0 22

2– दिल्ली ऊंचा सुनती है – कुसुम कुमार पृ0 78

3– संस्कार को नमस्कार – कुसम कुमार पृ0 163

4– पवन चतुर्वेदी की डायरी – कुसम कुमार पृ0 87

डॉ. कुसुम कुमार की भाषा शुद्ध साहित्यिक भाषा है–

" यह भी जानता हूँ .....लेकिन भावुक होना तो अच्छा है....इसमें बुरा क्या है....भावुक आदमी ही ठोकर खाता है एक पल और दूसरे पल योद्धा बना खड़ा दिखाई देता है। "–1

'मृदुला गर्ग' के नाटकों की भाषा सहज सरल, आम बोल चाल की भाषा है। उनकी भाषा अनुभूति की गहराई को व्यक्त करने में सक्षम है। मृदुला गर्ग के लेखन के विषय में दिनेश द्विवेदी का मत है–" पति पत्नी के बीच पसरे हुए दाम्पत्य के जलते, धुंधाते,बनते बिगड़ते,आपसी रिश्तों के तेवरो पर यों तो बहुत कुछ लिखा जा चुका है, और लिखा जा रहा है मगर इन बारीक सम्बन्धों की पेचीदियों से अलग हट यदि किसी ने बेलाग और बेलौस तरीके से लिखा है तो वह हैं मृदुला गर्ग । "2–

मृदुला गर्ग की भाषा में प्रवाहमयता, रोचकता है। पात्रानुकूल व प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग करती हैं मृदुला जी। शानी की माँ अपने पड़ोस के घर में आयी औरत के विषय में बताती है–" दिखाई दी हो तो बतलाऊँ। सुबह से आये हैं तो घर में घुसे बैठे हैं। सुनाई दे रही है तो बस ठी–ठी–ठी–ठी हंसी की आवाज। कह नहीं सकते, दुलहिन है या कुजड़िन। "3–

मृदुला जी ने व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। आवश्यकतानुसार अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी किया है–

"आई थिंक वी हैव सोल्ड आवरसेल्व्ज। वी हैव।"4–

मृदुला जी अपने कथ्य को कम से कम शब्दों में कहने में पूर्णतः सफल हैं।

लेबर आफिसरः"सॉरी मेरे हाथ में कुछ नही है।

मौलिकः फिर कमीसन किस बात का लेते रहे ? लेबर आफिसरः कमीशन ? कैसा कमीशन ? दरवाजा खो लिए जाकर ! जानते हैं आपने कितना संगीन जुर्म किया है ! आजकल बालमजदूरों को लेकर दिल्ली में हंगामा मचा हुआ है।"5–, मृदुला जी ने प्रचलित लोकगीतों का प्रयोग भी यथास्थान किया है।–

1– सुनो शैफाली – डॉ, कुसुम कुमार छः मंच नाटक पृ0 48

2– चर्चित महिला कथाकारों की कहानियाँ – स, दिनेश द्विवेदी पृ0 7

3– एक और अजनबी – मृदुला गर्ग पृ0 29

4– एक और अजनबी – मृदुला गर्ग पृ0 93

5– जादू का कालीन – मृदुला गर्ग पृ0 39

" देसवा के सब धन, धान
बिदेसवा में जाय रहे
महँगी पड़त हर साल
किरसक अकुलाय रहे
महँगी के मारे बिरहा बिसरिगो
भूलि गई कजरी कबीर।"1—

बच्चों के सपनों को, उनके खेल तमाशों को भी मृदुला ने अपनी सक्षम लेखनी से अनछुआ न रहने दिया —" एक...दो...तीन...उठमउठूँ !

तीन...दो...एक...भंरनभरुँ
एक...दो... तीन...उड़नछू !"2—

मृदुला गर्ग के नाटक ' तुम लौट आओ ' की भाषा भी साधारण बोलचाल की भाषा है। मीता अपने भाई की मृत्यु पर बूआ जी से कहती है—"राकेश ने यह रास्ता खुद चुना था। उसमें इनका कोई कसूर नहीं। "3—

सभी पात्र पढ़े— लिखे हैं। भाषा सहज ही संप्रेणीय है—" नहीं माँ वह नहीं हो सकेगा। पिता जी और बूआ जी को छोड़ कर मेरा आना किसी तरह नहीं होगा।"4— डॉ0 सरोज बिसारिया के नाटकों में शुद्ध परिष्कृत भाषा का प्रयोग सर्वत्र ही दिखता है। डॉ0 बिसारिया के नाटक में देश के गौरव, गरिमा का वर्णन है। सभी पात्र उच्च शिक्षित राजकुल से सम्बन्धित हैं, उनकी भाषा भी उन्ही के अनुरुप है। उनकी परिष्कृत भाषा का एक रुप प्रस्तुत है—

" क्षमा करें महाराज ! रत्न बनकर राज्य की मंजूषा में बंदी बनने की इच्छा नहीं, छिद्रान्वेषी को पुरस्कार कैसा ? रहा सम्मान, उसके अधिकारी हैं आपके कलाकार। मैं तो आभारी हूँ कि आपने इन उत्कृष्ट कलाकारों के दर्शन और सभाकक्ष में पदार्पण का अवसर दिया। मेरे लिए इतना ही यथेष्ट है। "5—

1— जादू का कालीन — मृदुला गर्ग पृ0 39
2— जादू का कालीन — मृदुला गर्ग पृ0 20
3— ~~जादू का कालीन~~ तुम लौट आओ — मृदुला गर्ग पृ0 31
4— तुम लौट आओ — मृदुला गर्ग पृ0 120
5— अकथ कहानी प्रेम की — डॉ, सरोज बिसारिया पृ0 47

उनके नाटक 'नगरेषु कांची' में भी ऐसी ही भाषा के दर्शन होते हैं।–"मुझे तो लगता है नाट्य कला है, इसलिए असीम है और शास्त्र परिभाषाबद्ध होते हैं अतः सीमामय होते हैं, तुम्हीं कहो बन्धु क्या सीमा में असीम को बाँधा जा सकता है ?"1–

डॉ0 बिसारिया के नाटक में भावप्रवणता व चित्रात्मकता भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है–" जल से लहर को क्या अलग किया जा सकता है ? मेरे मन का हर कम्प तुम्हारा है शिवकामी। तुम्हारा सामीप्य पाने की एक अव्यक्त लालसा मन में छाई रहती है पर महाराज की भेदक दृष्टि से भयभीत हो जाता हूँ। "2–,

डॉ0 सरोज बिसारिया की भाषा शुद्ध परिष्कृत होते हुए भी क्लिष्ट नहीं है।

त्रिपुरारी शर्मा की भाषा सरल, सहज, शुद्ध है। आज मध्यमवर्गीय घरों में बोली जाने वाली आम भाषा है । उनकी भाषा में क्लिष्ट शब्द नहीं हैं। भाषा हृदयग्राही है। उनकी भाषा में प्रवाहमयता बनी रहती है तारतम्य टूटता नहीं–"...फिर दूर मोतिया कचनार की झाड़ की आड़ पर आधा चॉद उग आता और बारिश से भीगे बादल उसे घेरने के लिए दौड़ते...पूरा जिस्म कॉप जाता है और उस पर चॉदनी से भीगी पत्तियॉ झड़ने लगती । "3–

त्रिपुरारी शर्मा के संवादों में चित्रात्मकता सवर्त्र विद्यमान है। वे अपनी भाषा के माध्यम से चित्रों को मूर्त रुप दे देती हैं–

" ऐसे नाच रहा था–ऐसे–
तक् तक् तक्
सिर ऐसे उठा कर घुमाता था–
और पीठ कितनी चिकनी थी।
पॉव में तो बस जादू । "4–

नाटक में लोकगीतों का रुचिकर प्रयोग किया गया है। नाटक की भाषा संवेदनशील तथा मन को छू लेने में सक्षम है। ममता कालिया ने अपने एकांकी संग्रह 'आप न बदलेंगे ' में शुद्ध परिष्कृत भाषा का प्रयोग किया है।

1– नगरेष कांची – डॉ, सरोज बिसारिया पृ0 9

2– नगरेष कांची – डॉ, सरोज बिसारिया पृ0 19

3– रेशमी रूमाल – त्रिपुरारी शर्मा पृ0 9

4– रेशमी रूमाल – त्रिपुरारी शर्मा पृ0 23

" इस बच्ची की आवाज पूरी संस्कृति का दस्तावेज मालूम होती है। बहुत मधुर, स्वच्छ, संस्कारवान आवाज है यह। इसमें बहुत सम्भावनाऐं हैं। साहित्य में उत्तराधिकार जैसी कोई चीज नहीं होती , वरना मैं कहता आपकी छोटी लड़की मेरा वारिस होने का हक रखती है। "1– इनके एकांकियों की भाषा अपने हर रुप में विद्यमान है। उन्होंने व्यंग्य का भी अच्छा प्रयोग किया है।–" मॉ मुहल्ले के बच्चों को मना कर दो सारा दिन स्कूटर पर लदे रहते हैं। ड्योढ़ी में खड़ा रहता है इसका मतलब यह नहीं कि जनता राज है। मुझे अपनी प्रियतमा जान से भी प्यारी है। मेरी प्रियतमा को खरोंच न लगे। उस पर मैल न चढ़े। (पास ही वन्दना चुपचाप जूते पालिश कर रही है।) "2–

आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले मुहावरों व कहावतों का भी प्रयोग ममता कालिया ने किया है।–

" पला पलाया घोड़ा, खाये ज्यादा भागे थोड़ा । "3–

ममता कालिया ने अपने एकांकियों में हास्य एवं व्यंग्य का भी प्रयोग किया है। उनका जिन्न आधुनिक है वह अंग्रेजी मिश्रित भाषा का प्रयोग करता है–" थैंक गॉड बाहर तो निकला। बाय गॉड हड्डियॉ जाम हो गई थी, चिराग में बैठे–बैठे। कहिए हुकुम !"4–

ममता कालिया ने प्रचलित लोकगीतों का भी यथास्थान प्रयोग किया है।–

" नन्ही नन्ही बुंदिया रे
सावन का मेरा झूलना । "5–

ममता कालिया की भाषा सहज संप्रेषणीय है। उन्होने पात्रों के अनुसार भाषा का चयन किया है।

मृणाल पान्डेय का नाम हिन्दी साहित्य के लिए अपरिचित नहीं है। उनके नाटकों की भाषा शुद्ध परिष्कृत, पात्रानुकूल ही रहती है। वे पात्र की मनःस्थिति, वातावरण का चित्रांकन करने में सिद्धहस्त हैं–

1– आपकी छोटी लड़की – ममता कालिया पृ0 27

2– आत्मा अठन्नी का नाम है – ममता कालिया पृ0 35

3– आत्मा अठन्नी का नाम है – ममता कालिया पृ0 57

4– आप न बदलेंगे – ममता कालिया पृ0 85

5– यहॉ रोना मना है – ममता कालिया पृ0 102

" उस नाटक के आडम्बर को अब बहुत देर हो चुकी है। तब जो अदाएँ रगों में गर्म खून होने का सबूत थीं, वे सब अब बेहूदगी लगती है।(चुप्पी) उस सब को लेकर मेरे मन में कोई मलाल भी नहीं। "1– उनकी भाषा में प्रवाहमयता है। पाठक की रुचि बनी रहती है–" वह गलत नहीं कह रही है रुक्मिणी ! इस ओहदे की खुशबू से भी सैकडों मॅंडराने लगते हैं,आगे–पीछे, और वे लोग दिलजोई का कोई भी मौका नहीं खोते। फिर उस क्षेत्र में चला जाऊॅंगा तो यह भीड़ चौगुनी हो जायेगी तब उन सबसे बात करना जरुरी हो जायेगाा। मेरा बेटा–बेटी होने की भारी कीमत चुकीई है बच्चों ने। "2–

व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग मृणाल जी ने बखूबी किया है–" तो ये रामनामी चारा क्या वहीं की मछलियॉं खाती हैं। "3–

मृणाल पान्डेय का नाटक' चोर निकल के भागा ' हास्य एवं व्यंग्य से भरपूर है। उन्होने अपने इस नाटक में भी कहावतों, मुहावरों का प्रयोग किया है।–"मेरी नानी कहती थी, कि अगर गोताखोरी ही करनी हो , तो कुएँ, बावड़ी के बजाए समंदर में गोता लगाओ –डूबना तो दोनो जगह हो सकता है, पर समुन्दर में कूदो तो स्यात कोई मोती हाथ लग जाए। "4–

मृणाल जी ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। शरीफा बी जो नाटकों में अभिनय किया करती थीं उनकी भाषा का एक रुप–" बस, अब आप हम पॉंचों पे छिड़किये भभूत औ धीमें से रुमाल से उठा के जेब में डाल लीजिए,औ ताजमहल के भीतर किसी कोने में खड़ा करके बस पुराने सैज (साइज) में तब्दील कर दीजै, बाकी हम सम्हाल लेंगे। "5–

' चोर निकल के भागा की भाषा हास्य व्यंग्य से भरपूर रुचिकर है। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी खूब हुआ है।

डॉ0 गिरीश रस्तोगी की भाषा सरल है, सहज है। शुद्ध, परिष्कृत, भाषा का प्रयोग करते हैं उनके पात्र। उनके नाटक ' असुरक्षित ' के पात्र पढ़े लिखे वर्ग से सम्बन्धित है। उनकी भाषा भी उन्ही के अनुसार है उनकी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग अधिक मात्र में हुआ है–

1–आदमी जो मछुआरा नहीं था – मृणाल पाण्डेय पृ0 22

2– आदमी जो मछुआरा नहीं था – मृणाल पाण्डेय पृ0 32

3– आदमी जो मछुआरा नहीं था – मृणाल पाण्डेय पृ0 34

4– चोर निकल के भागा – मृणाल पाण्डेय पृ0 20

5– चोर निकल के भागा – मृणाल पाण्डेय पृ0 31

यथा जेनुइन,पेसिव, एडजस्टमेंट ,मीटिंग, ग्रुप,पोस्टर्स,युथथिंकर्स ग्रुप,ओरिजिनेलिटी, क्रियेटीविटी, इंजीनियर, इन्टलेक्चुअल,रिसर्च स्कालर्स, जूनियर्स, इक्जामिनरशिप।
उनकी भाषा पात्रनुकूल होती है–

पुरुष–" मॉरेली स्ट्रांग तो फील करते हैं। न किसी से दबना,न डरना, अपने काम से काम।"–1 उनके संक्षिप्त संवाद भी कथ्य को स्पष्ट करने में सक्षम है–

" मैं पति हूँ।

मै पत्नी हूँ...

पुरुष....

स्त्री..."2–,

गिरीश रस्तोगी की भाषा में प्रवाहमयता है। ' अपने हाथ बिकानी' की बिन्दु कहती है–" कितने अनछुए फूल सी आवाज है– विश्व के अनहद नाद सी। कितनी मिठास है। ऐसी अल्हड़ आवाज कि उसको सुनकर और उसकी स्वामिनी को देखकर एक शख्सियत का एहसास हो। अपनी जमीन और इन्सानियत से गहरे जुड़कर ही यह शख्सियत मिलती है।"–3

डॉ. रस्तोगी की भाषा वातावरण का चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम है। वे पात्रानुकूल एवं प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग करती हैं– " मैं इस यातना शिविर में बन्दी हूँ। क्या आप यकीन कर सकते हैं ? मैं इस चारदीवारी से बाहर कहीं नहीं जा सकती। मेरे पिता ने मेरा बाहर आना–जाना बन्द कर दिया है। सारी पाबन्दियॉ लगा दी गयी हैं। सब मुझ पर नजर रखते हैं। रातों रात मैं मुजरिम हो गयी हूँ। अमूमन यही होता है –कठघरे में खड़ा करना बहुत आसान होता है।"4–,

'नहुष ' की भाषा शुद्ध साहित्यिक भाषा है। प्रस्तुत नाटक का कथ्य राजा व देवलोक से सम्बन्धित है इसलिए इस नाटक की भाषा भी परिमार्जित है। राजा नहुष कहते हैं–

1– असुरक्षित – डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 44

2– असुरक्षित – डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 44

3– अपने हाथ बिकानी – डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 45

4– अपने हाथ बिकानी – डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 69

" मेरे मन की बात कह दी। सचमुच जैसा मूल्य है,वैसा ही पदार्थ होगा और वह केवल पुरुषार्थ है पुरुषार्थ। लेकिन मेरे इस देवत्व से स्वर्ग भोग से मेरी मातृ–भूमि को मेरी मानवजाति को क्या मिला। मुझे ख्याति तो मिली पर मेरा कौन–सा मूल्य मिला। 1–,

अपने कथ्य को प्रभावकारी बनाने पर स्पष्ट करने के लिए डॉ. रस्तोगी ने कविताओं का प्रयोग भी किया है–

" हम कौन थे क्या हो गये हैं,
और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर
ये समस्यायें सभी।" 2–,

डॉ. गिरीश रस्तोगी ने हमें हमारी परिस्थितियों की याद दिलाने के लिए कई बार इस कविता का प्रयोग किया है। दूसरी भी कवितायें प्रयुक्त हैं।

'स्वरूप कुमारी बख्शी' का एकांकी संग्रह ' मैं मायके चली जाऊँगी' हास्य एवं व्यंग्य से भरपूर एकांकी का संग्रह है। इसकी भाषा भी हास्य एवं व्यंग्य से लबालब है–

अय हय मैंने कब कहा कि तुम काली– कलूटी हो गयी । रही रुप– रंग की बात, तो आजकल सफेदी पोतकर कउआ परी भी हंसिनी के नखरे करने लगती है।"3–,

स्वरूप कुमारी बख्शी के हास्य का दूसरा रुप " मिस टुनटुन मुझे आपकी सब शर्तें मंजूर है, पर मेरी भी एक शर्त है। वह यह कि आप अपनी शर्तों का सबके सामने वर्णन न कीजिए।"4–, इनके नाटकों के संवाद के विषय में आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित हुआ–.. ." सभी नाटकों के संवाद चुटीले, सरस और सार्थक हैं तथा यदा कदा चालू मुहाविरों एवं व्यंग्य –हास्य की शैली के प्रयोग ने उसकी प्रभावोत्पादकता को बढ़ा दिया है।"5–,

सावित्री रांका के एकांकी की भाषा शुद्ध परिष्कृत पात्रानुकूल है। उनके संवाद पात्रों की मनःस्थिति को उजागर करने में सक्षम है–

1– नहुष – डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 40

2– नहुष – डॉ, गिरीश रस्तोगी पृ0 60

3– मै मायके चली जाउंगी – स्वरूप कुमारी बख्शी पृ011

4– विवाह का विज्ञापन – स्वरूप कुमारी बख्शी पृ0 39

5– मै मायके चली जाउंगी – स्वरूप कुमारी बख्शी पृ0 91

" कुणाल तुम जानते हो, मैं एक सुखी नारी नहीं हूँ। अपने जीवन से पूरी तरह ऊब चुकी हूँ। सम्भवतः विशाल साम्राज्य का अधिकार देकर सम्राट मेरे अभावों की पूर्ति करना चाहते हैं।'1–,

सावित्री रांका की भाषा पात्रनुकूल व प्रसंगानुकूल है – सम्राट अशोक कलिंग विजय के पश्चात् मनसा दुःखी हैं वे अपने उद्गाार इस प्रकार व्यक्त करते हैं–

" नहीं सेनापति, मैं मानव–रक्त की प्यासी इस तलवार को अन्तिम नमस्कार कर चुका हूँ। मेरे साम्राज्य में अब कहीं भी नर–संहार नहीं होगा।"2–,

मृदुला विहारी के नाटकों की भाषा सरल सहज है। सुनने वालों तक सम्प्रेषित होने में समय नहीं लगता। मृदुला विहारी ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है– रंजना का मैनेजर – इज दिस वे टु वर्क ? ये समय है आने का।"–3

क्लर्क की भाषा– " अरे अइसे काम करियेगा त इ तकलीफवा से चेहरे पर निशान पड़ जायेगा। ...हम त कहते हैं कि अभीए से कोई धब्बा मिटाने वाला कीम खरीद कर रख लीजिए।"–4

मृदुला बिहारी की भाषा में प्रवाहमयता है– " लगता है सारी सृष्टि सारा आकाश ,धरती, चॉंद ,सितारे,हवा हमारे लिए हैं। समझ में नहीं आता कोई जिन्दगी में इससे भी ज्यादा चाह सकता है ?"5–,

मृदुला बिहारी के संवाद छोटे–छोटे हैं। पर अपने कथ्य को स्पष्ट करने में पूर्वतः सक्षम हैं। उनकी भाषा हमारे सामने चित्र सा उपस्थित कर देती है– हीरा का स्वर–

" दीदी कैसी भली लगती हैं..... लाल बिन्दी......चूड़ियॉं, भरी–पूरी और मैं......पता नहीं क्यों मेंरा मन इधर कमजोर होता जा रहा है....जैसे अन्दर की छटपटाहट कूदकर सामनें खड़ी हो गयी हो। 6–,

---

1– प्रतिशोध (एक और आवाज) सावित्री रांका पृ0 15

2– हृदय परिवर्तन (एक और आवाज) सावित्री रांका पृ0 49

3– अंधेरे से आगे – मृदुला बिहारी पृ0 32

4– अंधेरे से आगे – मृदुला बिहारी पृ0 33

5– तीसरे रास्ते का राही – मृदुला बिहारी पृ0 49

6– देहरी – मृदुला बिहारी पृ0 112

विभिन्न नाटकों के संवादों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी नाट्कारों ने जिन कथा और घटनाक्रमों को चुना है, तद्नुरूप पात्र है, पात्रों के अनुरूप संवाद और भाषा–शैली है। इन नाटकों का कथ्य कहीं सामाजिक है, कहीं राजनैतिक तो कहीं सामाजिक व राजनैतिक विसंगतियॉ । इसलिए इन नाटकों में कहीं विचार की गम्भीरता है, तो कहीं हास्य व्यंग्य का पुट है। अतः इन नाटकों में संवाद बहुत ही संक्षिप्त, चुस्त, व्यंजनात्मक और कथ्य तथा चरित्र को गतिशील बनाने वाले हैं ।